ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS:

श्याम विमल कृत उपन्यास 'प्रेम अनंत' में व्यक्त स्त्री–पुरूष सम्बन्धों में स्वच्छंदता

गुरपाल राम

एम.ए.(हिन्दी), कुरूक्षेत्र युनिवर्सिटी, कुरूक्षेत्र, यू.जी.सी. नैट, बी.एड., एम.एड., सी.डी.एल.यू., वी.पी.ओ. साहूवाला–1 तहसील व जिला सिरसा–125077

स्त्री–पुरूष सम्बन्धों का यह निरूपण 'प्रेम अनंत' उपन्यास में भी बड़ी मार्मिकता के साथ हुआ है। 'प्रेम अनंत' के पात्र विभिन्न भूमिकाओं में इस सम्बन्ध को अभिव्यक्ति देते हैं। नारी विवाह के पश्चात भी वह अपने पुरूष–मित्र के साथ सम्बन्ध बनाये रखती है । दूसरी ओर, अपने व्यक्तित्व को महत्व देने वाली अचला पुरूष मित्र को खो देने की ग्लानि में गलती रहती है। लगता है कि उसके दिल में जो कुछ भी था, चुक गया है। शशि अब वह कुछ महसूस नहीं कर पाती। साँसे आती है, दिल धड़कता है, पर जिन्दगी समाप्त हो गयी है, और वह ऐसा इसलिए महसूस करती है कि जिस अनंत को उसने प्यार किया था, वह उसका न होकर पराया हो जाता है। पुरूष की इस उपेक्षा को वह भूल नहीं पाती और आत्मग्लानि तथा आत्महीनता के बीच अपने प्राणों को तिल–तिल गलाती रहती है और 'नर्वस ब्रेक डाउन' की सीमा पर पहुँच जाती है। उधर पति का काम केवल लम्बे–लम्बे बिलो को चुकाना रह जाता है। आज की नारी अपने अस्तित्व को स्थायीत्व देने के लिए संघर्षरत है। वह अपने 'स्व' की पहचान में संलग्न है। उसकी इच्छा है कि उसके अस्तित्व को, उसकी उपस्थिति को, उसके रूप–रंग को, समाज के द्वारा सम्मान मिले। अपने अस्तित्व के साथ–साथ वह अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का भी उद्घोष करती है। 'प्रेम अनंत' में अस्तित्व संबंधी दृष्टिकोण मुखर हुआ है, क्योंकि आज नारी की कुण्ठा, निराशा, यातना, संत्रास, विसंगति और हीन भावना इसीलिए है कि वह अपने अस्तित्व अथवा 'स्व' की पहचान के लिए संघर्षशील है। अस्तित्व से अभिप्राय सिर्फ नारी के शारीरिक अस्तित्व से ही नहीं है, बल्कि उसके 'इनर सेल्फ' अर्थात् भावनाओं से है। 'प्रेम अनंत' में नारी–संघर्ष अपने 'सेल्फ' के परिचय – अपरिचय से ही है–'मेरा ध्यान तो उसी पर केन्द्रित था। क्या बताऊं दोस्त, क्या कमाल की स्केटिंग कर रही थी? इतने में देखता क्या हूं कि वह एक लड़के के साथ हाथ में हाथ डाले स्केटिंग कर रही है! न जाने क्यों, मुझ में डाह का संचार होने लगा! टब तो उस लड़के ने उसकी कमर पर अपना हाथ धर रखा था। एक अंग्रेजी गाना बज रहा था – 'आई लव यू एंड यू लव मी' – इस तरह के बोल थे। इस धुन पर वह 'जोड़ी' नृत्य–मुद्रा में स्केटिंग करने लगी।

आज के समाज में व्यक्ति 'स्व' की पहचान के लिए मुखौटे धारण करने में भी नहीं हिचकिचाता। इन मुखौटों को धारण करने के पीछे भी अस्तित्व संबंधी द्वन्द्व ही होता है भले ही वह भीतर से कुछ, बाहर से कुछ हो, पर यदि दूसरे उसे मुखौटे लगाकर देखने में ही अपनत्व की झलक दे सकते हैं, तो वह अपनी वास्तविकता को अपने अंतस् की घुटन में छिपाकर बाह्य रूप से मुस्कराकर अस्तित्व को स्थायीत्व दे सकता है। व्यक्ति अपने प्रमाणित होने को द्वन्द्व द्वारा बताता है। आज की नारी द्वन्द्व, संघर्ष और हृदय की घुटन में घुटती रहती है। मौन, चुप और निर्विकार रूप से बाह्य क्रियाकापों का निरीक्षण करती रहती है। ''आज की नारी के लिए धर्म में कोई आस्था नहीं है, सामाजिक मूल्य मिथ्या सिद्ध हो चुके हैं, नैतिकता के प्रति एक विद्रुप भाव है, आज वह केवल अपनी निजता की चेतना ओर अस्तित्व ही पहचानने में व्यस्त है। सब ओर से कटकर उसका दायरा संकुचित हो गया है। यही निर्विकार और निरासक्त स्थिति ही आधुनिक द्वन्द्व की आधार–शिला है। अपने स्वार्थ, अहं और कुण्ठा में लिप्त व्यक्ति निराशमय जीवन जीती हुई, अपने अस्तित्व के प्रति सजग रहती है। व्यक्तिवादी भावनाओं से उद्भूत स्वातंत्र्य, क्षण की महता, निराशा, विसंगति समाज के प्रति विद्रोह की भावनाओं ने मनुष्य को इतना संकुचित बना दिया कि वह अपने अतिरिक्त दूसरे की उपस्थिति को अजनबीपन की भावना से देखता है। व्यक्ति अपने अस्तित्व के लिए तो संघर्ष करता ही है, अपने चारों ओर फैले हुए परिवेश के लिए भी संघर्षरत है। आलोच्य उपन्यास में पुरुष–नारी पात्र अपने अस्तित्व के लिए द्वन्द्वरत एवं संघर्षशील नहीं हैं,बल्कि स्वच्छंद हैं–'रूचि स्लैक्स और ऊनी पुलोवर पहनकर सुधीर के साथ क्लब चली गई। ढलते दिन में अकेलेपन को लेकर कमरे में कैसे बैठा जा सकता था! सुमंत भी ताला बंद कर चाबी रोश्नादान पर रखकर बाहर निकल आया। माल रोड़ की तरफ जाने का रास्ता लंबा था, फिर लौटने में न जाने कितनी देर हो जाए, सो सुमंत ने कॉटेज के पीछे वाली रोड़ पकड़ी, नए अजनबी रास्ते पर घूमना ही हो जाएगा। ढ़लती धूप पेडों में से छनकर सड़क को चितकबरा बना रही थी। अच्छे–अच्छे कॉटेज और उनके प्यारे–प्यारे नाम। चार का वक्त था। दो–तीन मोड़ लांघने पर सामने पड़ रहे पहाड़ की हरियाली पर झीनी चादर सी धुंध ने, जो कुछ क्षण बाद पिघलकर खो गई; फिर सुनाई पड़ी खिलखिलाहट और नजर आई स्कूली यूनिफॉर्म में तिब्बती नाक–नक्श वाली आती हुई किशोर लड़कियाँ। शायद इधर कोई स्कूल है।

साधारणतः बोलचाल में हम समाज शब्द का प्रयोग जनसमूह के लिए करते हैं। हिन्दी विश्वकोष में समाज शब्द के लिए समूह, संघ, दल आदि अर्थ दिए गए हैं।'' मानक हिन्दी कोश में ''समाज बहुत से लोगों का गिरोह या झुंड है।'' जब हम हिन्दु समाज, मुस्लिम समाज, पुरूष समाज, कृषक समाज, दलित समाज सदृश शब्दों का प्रयोग करते हैं तो हमारा आशय इन विशिष्ट वर्गों के मनुष्यों की समष्टि से होता है। समाजशास्त्र में समाज को अमूर्त रूप में स्वीकार किया गया है। लगभग सभी समाजशास्त्री समाज शब्द का प्रयोग सामाजिक संबंधों की व्यवस्था के लिए ही करते हैं। रयूटर ने कहा है, ''जिस प्रकार जीवन एक वस्तु नहीं है, बल्कि जीवित रहने की प्रक्रिया है।'' मानवेत्तर संबंध समाजशास्त्र के अध्ययन का विषय नहीं है। राईट के अनुसार ''मनुष्यों के समूह को समाज नहीं कहा जाता, अपितु समूह के अंतर्गत व्यक्तियों के संबंधों की व्यवस्था का नाम समाज है।'' समाज के लिए संबंध स्थापन की प्रक्रिया अत्यावश्यक है। गिडिंग्स ने भी कहा है– ''समाज स्वयं एं संघ है, एक संगठन है, औपचारिक संबंधों का योग है, जिसमें सहयोगी व्यक्ति परस्पर आबद्ध है।'' इसी विषय को स्पष्ट करते हुए मैकाइवर तथा पेज ने लिखा है – ''सामाजिक संबंधों के जाल को हम समाज कहते हैं।'' क्रिग्सले डेविस के अनुसार – ''विभिन्न व्यक्तियों के बीच अर्थपूर्ण अन्तः क्रियाएं ही समाज का मुख्य तत्त्व है।''

'प्रेम अनंत' उपन्यास पुरूष–स्त्री संबंधों पर आधारित है तथा इन्हीं संबंधों से समाज की सार्थकता है। पुरूष–स्त्री संबंधों का उदाहरण देखिए–

'एक पत्र उसके बड़े भाई का था, मद्रास यानी चेन्नई से आया हुआ। लिखा था– अबकी छुट्टियां पूरी करके अध्यापकी से इस्तीफा दे दो और यहां चले आओ। व्यापार का क्षेत्र काफी बढ़ चला है। उसमें किसी पराए को साथ लेने की बजाय अपने भाई को लेना बेहतर है... अपने आखिर कब काम आते है! एक खास बात भी लिखी थी कि एक लड़की उन्होनें देख रेखी है.... वहीं रहते हैं...अच्छा खाता–पिता परिवार है... लड़की एम0ए0 कर रही है और नृत्य जानती है.... ऐसे कुलीन रिश्ते से उसे इन्कार नहीं करना होगा...मद्रास आकर खुद देख भी लें... इत्यादि।

समाज का रूप भी सामानांतर रूप से परिवर्तित हो जाता है।

'प्रेम अनंत' उपन्यास पुरुष–स्त्री संबंधों के आधार पर समाज की निम्नलिखित विशेषताएं उद्घाटित होती हैं–समाज एक व्यवस्था है। समाज सामाजिक संबंधों का योग है। आर्थिक क्रियाएं समाज में मुख्य भूमिका अदा करती हैं। सामाजिक समस्या का साधारण शब्दों में अर्थ है समाज का विकास अवरूद्ध करने वाले कारण या उनसे उत्पन्न तनाव। व्यक्ति के समुचित विकास के लिए समाज अस्तित्व में आया है। समाज व्यक्ति और समाज के मध्य संतुलन स्थापित करके इनके विकास में निरंतर अग्रसर रहता है। जिस समय किन्हीं कारणों से यह संतुलन भंग होता है और सामाजिक मान्यताओं के सहज पालन में बाधा उपस्थित होती है, उस समय सामाजिक समस्याएं देखने में आती हैं। कुछ सामाजिक समस्याएं अपने प्रश्न उठाकर अन्ततः समाज को बदलती है और उसका मार्गदर्शन करती हैं। दूसरी ओर ऐसी समस्याएं भी हैं जो अवांछित है। उनका हल करके या उनका शमन करके समाज अपनी गति अनवरत बनाए रखता है। 'प्रेम अनंत' उपन्यास में पुरुष–स्त्री संबंधों की समीक्षा की गई है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक तंत्र तथा अद्योगीकरण ने अर्थ–तंत्र को काफी प्रभावित किया है। मूल्यों के परिवर्तन से पुरुष भाग्यवादी न रहकर , अधिक तर्कवादी हो गया है। मध्य–वर्ग की यह विडम्बना है कि न तो वह निम्नवर्ग को स्वीकारता है और न ही उच्च–वर्गीय बन पाता है। अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए कल्पनाओं का सहारा लेकर, उच्च इच्छाओं और आशाओं का अंकाक्षी बन जाता है, जो धनाभाव के कारण अपूर्ण रहती है, जिस पर निराश होकर मध्यवर्ग–कुण्ठायओं से ग्रसित हो जाता है। अतः मध्यववर्ग अर्थ तंत्र की चक्की में पिसता हुआ दुखी होता रहता है। श्याम विमल के कथा–साहित्य में आर्थिक कठिनाइयों से जूझता पुरुष–संघर्ष सर्वत्र देखा जा सकता है। गरीबी और शिक्षित व्यक्ति की बेरोजगारी से उत्पन्न आर्थिक द्वन्द्व आज के साहित्य का मूल स्वर है। श्याम विमल के उपन्यासों का मूल स्वर आर्थिक अभाव के कारण उतपन्न पुरुष –संघर्ष है।

'मुस्कराकर अनंत ने लिफाफे में उँगलियाँ डालकर दो–तीन फलियां उठा ली। दोनों खामोश... केवल मूंगफलियों के टूटने से उठने वाली चिटक–चिटक की आवाज उनकी उंगलियों पर होती रही और चबाने की आवाज मुँह में। रह–रहकर हवा का झोंका आता, तो अनंत के बाल माथे पर भवों को छूने लगते तथा शशि की सफेद साड़ी का पल्लू को उठाकर फिर कंधे पर लेती और छाती को ढ़ांप लेती। इस बीच एकाध वाक्य मौसम को लेकर कहे गए और खामोशी... ।

निष्कर्ष:

कहा जा सकता है कि आर्थिक द्वन्द्व की धुरी पर निम्न मध्यवर्गीय परिवार की विभीषिका,, टूटन, निरूपायता का यर्थाथ अंकन, जीवन मूल्यों की टकराहट का स्वर श्याम विमल कृत 'प्रेम अनंत' में सुना जा सकता है, तो अर्थ के नाम पर पारिवारिक जीवन की विशृंखलता, जर्जरता, विकृति, अमानवीयता का चित्र भी देखा जा सकता है। आर्थिक विषमताएं व्यक्ति में खीझ, निराशा और क्रोध उत्पन्न कर देती है, जिससे नारी अपने अन्तस् में तो द्वन्द्वी हो ही उठती है और साथ ही वाह्य संस्थाओं के प्रति भी विद्रोही हो जाती है। जीवन की भौतिक आवश्यकता के लिए अर्थ को मूल तत्व स्वीकारा गया है, जिसके अभाव में पुरुष का जीवन कलह–पूर्ण, निराश, ऊब–भरा व अशांत हो जाता है।